नईदुनिया



सर्राफा बाजार में सांकेतिक गिरावट, सोना और चांदी की फीकी पड़ी चमक

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान सोना और चांदी की कीमत में सांकेतिक गिरावट का रुख बना हुआ नजर आ रहा है। कीमत में बदलाव होने के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,25,070 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,25,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,14,640 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,14,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी 100 रुपये प्रति किलोग्राम की मामूली गिरावट आने के कारण यह चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,74,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है।

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,25,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,14,790 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,25,070 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,14,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,25,120 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,14,690 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,25,070 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,14,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,25,070 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,14,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,25,120 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,14,690 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,25,220 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,14,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,25,120 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,14,690 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। चंडीगढ़ में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,25,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,14,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,25,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,14,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने के भाव में मामूली गिरावट दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना 1,25,070 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजार में 22 कैरेट सोना 1,14,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

न्यूज ब्रीफ

सेबी का एमआईआई प्रमुखों के कार्यकाल की सीमा तय करने का प्रस्ताव, एमडी के लिए एक संस्थान में 8, कुल 12 साल की सीमा, मौजूदा अधिकारियों को 15 साल तक की छूट



नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने देश के प्रमुख स्टाक एक्सचेंजों और डिपाजिटरी कंपनियों जैसे मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस (एमआईआई) के शीर्ष अधिकारियों के कार्यकाल को लेकर बड़ा प्रस्ताव रखा है। इसके तहत, मैनेजिंग डायरेक्टर (एमडी) और एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर (ईडी) के कार्यकाल की अधिकतम सीमा तय की जाएगी। प्रस्ताव के मुताबिक किसी एक एमआईआई में एमडी का अधिकतम कार्यकाल 8 साल होगा, जबकि अलग-अलग संस्थानों में एमडी के तौर पर काम करने की कुल सीमा 12 साल तय की गई है। हालांकि, पहले से इस पद पर काम कर रहे अधिकारियों को कुल 15 साल तक की छूट मिलेगी। एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर के लिए एक संस्थान में 8 साल और कुल 16 साल की सीमा प्रस्तावित है। वर्तमान में एमडी और ईडी एक संस्थान में अधिकतम 10 साल तक काम कर सकते हैं। इस प्रस्ताव का सीधा असर एनएसई और बीएसई जैसे प्रमुख संस्थानों के शीर्ष अधिकारियों पर पड़ सकता है। एनएसई के एमडी और सीईओ आशीषकुमार चौहान पहले ही विभिन्न एक्सचेंजों में करीब 14 साल इस पद पर रह चुके हैं। उनका मौजूदा कार्यकाल जुलाई 2027 में समाप्त होगा। यदि यह प्रस्ताव लागू होता है, तो मौजूदा अधिकारियों के लिए प्रस्तावित 15 साल की कुल सीमा उनके भविष्य के कार्यकाल के लिए अहम होगी। बीएसई में भी नए सीईओ की तलाश जारी है, क्योंकि मौजूदा एमडी और सीईओ सुंदररमन राममूर्ति का कार्यकाल जून 2027 में खत्म हो रहा है।

सरकार के आरडीआई फंड से 13 स्टार्टअप्स को मिलेगी मदद, टेक्नोलाजी डेवलपमेंट बोर्ड को 1,000 करोड़ का अतिरिक्त आवंटन

नई दिल्ली। देश में नवाचार और तकनीकी प्रगति को गति देने के उद्देश्य से सरकार के महत्वाकांक्षी रिसर्च, डेवलपमेंट एंड इनोवेशन (आरडीआई) फंड के तहत लाभार्थियों के दूसरे समूह का चयन कर लिया गया है। इस समूह में कुल 13 कंपनियां शामिल हैं, जिनमें पर्सेप्टाइन, सिगटपल, सिनएलआर और 5सी नेटवर्क जैसी 11 नई पीढ़ी की स्टार्टअप्स कंपनियां प्रमुख हैं। हालांकि, इन चयनित कंपनियों की औपचारिक घोषणा अभी प्रतीक्षित है। फंड का प्रबंधन करने वाले टेक्नोलाजी डेवलपमेंट बोर्ड (टीडीबी) को हाल ही में 1,000 करोड़ रुपए का अतिरिक्त आवंटन प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही टीडीबी की कुल स्वीकृत राशि प्रारंभिक 2,000 करोड़ रुपए से बढ़कर 3,000 करोड़ रुपए हो गई है। यह बढ़ी हुई पूंजी विशेष रूप से दूसरे समूह की इन चयनित कंपनियों को वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। उल्लेखनीय है कि सितंबर में टीडीबी ने प्रशासनिक कारणों का हवाला देते हुए नए प्रस्तावों के लिए आमंत्रण बंद कर दिया था। सूत्रों के अनुसार, स्टार्टअप्स से मिल रही फंडिंग की भारी मांग और बोर्ड के पास उपलब्ध पूंजी के बीच तालमेल बिठाना मुश्किल हो रहा था, अप्रैल 2026 तक ही टीडीबी को 124 परियोजनाओं के प्रस्ताव मिल चुके थे। इससे पहले फंड के पहले दौर में 22 कंपनियों को चुना गया था, जिन्हें सरकार ने 2,192 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता मंजूर की थी।

कच्चे तेल की कीमतें गिरीं, ब्रेंट 92 डालर प्रति बैरल, नवंबर में अब तक ब्रेंट क्रूड की कीमतों में करीब 20 प्रतिशत की गिरावट

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखने को मिल रही है, ब्रेंट क्रूड लगभग 92 डालर प्रति बैरल और अमेरिकी कच्चा तेल डब्ल्यूटीआई लगभग 83 डालर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। नवंबर महीने में अब तक ब्रेंट क्रूड की कीमतों में करीब 20 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। मध्य पूर्व में तनाव और तेल टैंकरों पर लगातार हमलों के बावजूद यह गिरावट दर्ज की गई, जिसकी मुख्य वजह मजबूत तेल आपूर्ति है। जानकारों के अनुसार, अमेरिका में मध्यावधि चुनावों के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान पर बड़े हमले टालने के फैसले से तेल आपूर्ति बाधित होने की आशंका कम हुई थी, जिससे कीमतों पर दबाव बढ़ा। जानकारों का मानना है कि बाजार फिलहाल कच्चे तेल की कीमत में लगभग 25 से 30 डालर प्रति बैरल का अतिरिक्त जोखिम प्रीमियम जोड़कर चल रहा है, जो अमेरिका और ईरान के बीच संभावित संघर्ष की आशंका को दर्शाता है।



ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत एशिया में भी मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान भारी बिकवाली के दबाव में गिरावट के साथ बंद हुए थे। हालांकि, सुबह डाउ जोन्स फ्यूचर्स जोरदार तेजी के साथ हरे निशान में कारोबार करता नजर आ रहा है। दूसरी ओर, यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान दबाव के बीच मिला-जुला माहौल बना रहा, जहां ज्यादातर प्रमुख सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए। एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार देखा जा रहा है, जिसमें ज्यादातर प्रमुख सूचकांक दबाव के कारण लाल निशान में काम कर रहे हैं। भारतीय बाजार के लिए शुरुआती संकेत देने वाला गिफ्ट निफ्टी भी सुबह मामूली कमजोरी के साथ कारोबार कर रहा है।



अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान वाल स्ट्रीट पर चौतरफा गिरावट दर्ज की गई। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से जुड़े शेयरों में भारी बिकवाली और एनवीडिया में आई कमजोरी ने पूरे बाजार पर दबाव बना दिया। इसके साथ ही एंथ्रोपिक के शेयरों में लिस्टिंग के दूसरे दिन आई गिरावट और अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दरों को लेकर बनी अनिश्चितता से निवेशकों की धारणा कमजोर हुई। इस दबाव के कारण शुक्रवार को डाउ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 949.77 अंक यानी 1.93 प्रतिशत टूट कर 48,147.33 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स भी 265.33 अंक यानी 3.70 प्रतिशत की बड़ी कमजोरी के साथ 6,910.50 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत करने में सफल रहा। वहीं, नैस्डैक कंपोजिट इंडेक्स ने सबसे भारी गिरावट दर्ज की और यह 1,261.47 अंक यानी 5.28 प्रतिशत लुढ़क कर 22,617.73 अंक के स्तर पर आ गया। हालांकि, सुबह डाउ जोन्स फ्यूचर्स फिलहाल 775.38 अंक यानी 1.61 प्रतिशत की जबरदस्त तेजी के साथ 48,922.71 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान कमजोरी का रुख बना रहा। जर्मनी के डीएएक्स इंडेक्स में बड़ी गिरावट आई और यह सूचकांक 661.03 अंक यानी 2.67 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 24,802.78 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह फ्रांस के सीएसी इंडेक्स ने 152.99 अंक यानी 1.93 प्रतिशत की गिरावट दर्ज करते हुए 7,927.75 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। हालांकि, ब्रिटेन का एफटीएसई इंडेक्स बिना किसी बदलाव के सपाट रहते हुए 10,346.34 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

ग्लोबल मार्केट के इन मिले-जुले संकेतों के बीच एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार होता हुआ नजर आ रहा है। एशिया के नौ प्रमुख बाजार में से छह के सूचकांक दबाव के कारण लाल निशान में काम कर रहे हैं। वहीं, तीन सूचकांक मजबूती के साथ हरे निशान में बने हुए हैं। भारतीय बाजार के लिए शुरुआती संकेत देने वाला गिफ्ट निफ्टी सुबह 6 अंक यानी 0.02 प्रतिशत की मामूली कमजोरी के साथ 25,739.50 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जो घरेलू बाजार के लिए सपाट शुरुआत के संकेत हैं।

जापान के शेयर बाजार में सबसे भारी गिरावट देखी जा रही है, जहां निक्केई 225 इंडेक्स 3,007.56 अंक यानी 5.33 प्रतिशत लुढ़क कर 56,436.65 अंक के स्तर पर आ गया है। दक्षिण कोरिया का कोस्पी इंडेक्स भी 184.46 अंक यानी 3.79 प्रतिशत टूट कर 4,685.50 अंक के स्तर पर फिसल गया है। इसी तरह सिंगापुर का स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 52.38 अंक यानी 1.05 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 4,922.79 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

चीन के शंघाई कंपोजिट इंडेक्स में भी नरमी दिख रही है। फिलहाल यह सूचकांक 33.88 अंक यानी 0.96 प्रतिशत की गिरावट के साथ 3,499.91 अंक के स्तर पर बना हुआ है। इसके अलावा हान्गकान्ग का हैंगसेंग इंडेक्स भी 134.80 अंक यानी 0.60 प्रतिशत टूट कर 22,276.00 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

दूसरी ओर, ताइवान स्टाक एक्सचेंज पर जोरदार तेजी देखी जा रही है, जहां ताइवान वेटेड इंडेक्स 1,056.11 अंक यानी 2.93 प्रतिशत उछल कर 37,089.40 अंक के स्तर पर पहुंच गया है। इंडोनेशिया के बाजार में भी मजबूती का माहौल है, जहां जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 91.88 अंक यानी 1.79 प्रतिशत की बढ़त के साथ 5,238.21 अंक के स्तर पर बना हुआ है। इसके साथ ही थाईलैंड के सेट कंपोजिट इंडेक्स में भी 0.86 अंक यानी 0.06 प्रतिशत की सांकेतिक बढ़त दर्ज की गई है और यह सूचकांक 1,454.14 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

चाय उद्योग को मिलेगी नई गति, सरकार निर्यात व गुणवत्ता पर केंद्रित



नई दिल्ली

वाणिज्य मंत्री ने हितधारकों के साथ किया अहम मंथन

भारत, जो दुनिया में काली चाय का सबसे बड़ा उत्पादक और तीसरा सबसे बड़ा वैश्विक निर्यातक है, अपने चाय उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी कड़ी में, वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने पश्चिम बंगाल के कुर्सेओंग में चाय उद्योग के हितधारकों के साथ एक अहम बैठक की अध्यक्षता की। बैठक का मुख्य उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना, गुणवत्ता में सुधार करना और चाय श्रमिकों के कल्याण को सुनिश्चित करना रहा, जबकि वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत ने 988.13 मिलियन डालर मूल्य की 282.11 मिलियन किलोग्राम चाय का निर्यात किया था।

यह क्षेत्र देश की कृषि अर्थव्यवस्था और निर्यात आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस उच्च स्तरीय बैठक में दार्जिलिंग चाय उद्योग के पुनरुद्धार, चाय नीलामी प्रणाली को और अधिक प्रभावी, तेज़ तथा पारदर्शी बनाने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। वाणिज्य मंत्री ने चाय अनुसंधान को सुदृढ़ करने, गुणवत्ता में सुधार लाने और एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन (ईपीएम) के तहत निर्यात को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया। हितधारकों के साथ व्यापार करने में आसानी को प्राथमिकता बनाते हुए प्रक्रियाओं को सरल बनाने और दक्षता बढ़ाने पर भी सहमति बनी, जिसमें तकनीक-आधारित सुधारों और परिचालन दक्षता में वृद्धि पर बल दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारत की उपस्थिति को मजबूत करने, वैश्विक स्तर पर भारतीय चाय की स्थिति को बेहतर बनाने और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए तकनीक-आधारित सुधारों तथा लक्षित प्रचार उपायों पर चर्चा हुई। सरकार, टी बोर्ड इंडिया और उद्योग के बीच समन्वित प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया गया, ताकि पारंपरिक और उभरते दोनों बाजारों में भारतीय चाय को बढ़ावा दिया जा सके। बैठक में चाय बागान श्रमिकों और उनके परिवारों के कल्याण का मुद्दा भी केंद्रीय विषय रहा, जिससे क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए व्यावहारिक सुझाव सामने आए। इस पहल का लक्ष्य भारतीय चाय को वैश्विक मंच पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना है।

एफएमसीजी में विदेशी रौनक लौटी, निवेशकों ने 15 महीने बाद लगाया दांव



नई दिल्ली। लंबे समय से सुस्ती झेल रहे फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स (एफएमसीजी) सेक्टर में विदेशी निवेशकों की वापसी हुई है। करीब 15 महीने की लगातार बिकवाली के बाद नवंबर महीने में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस क्षेत्र में 30 करोड़ डालर से अधिक का शुद्ध निवेश किया है। सस्ते मूल्यांकन और कच्चे माल की कीमतों में नरमी से कंपनियों की कमाई में सुधार की उम्मीद ने विदेशी फंडों को एक बार फिर आकर्षित किया है। एक समय था जब कमजोर मांग, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और कच्चे माल की महंगाई के कारण एफएमसीजी सेक्टर से विदेशी पैसा लगातार बाहर निकल रहा था। हालांकि, अब वैश्विक तकनीकी और एआई शेयरों से जुड़ी चिंताओं के बीच विदेशी निवेशक भारतीय कंपनियों में फिर से दिलचस्पी दिखा रहे हैं, जिसका सीधा फायदा एफएमसीजी क्षेत्र को मिल रहा है। जानकारों के मुताबिक एफएमसीजी सेक्टर का एक साल आगे की अनुमानित कमाई के आधार पर पीई रेशियो अपने पिछले 10 साल के औसत से नीचे आ गया है। मारिको को छोड़कर, अधिकांश प्रमुख कंपनियों के शेयर भी अपने पांच साल के औसत मूल्यांकन से कम पर कारोबार कर रहे हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि कम मूल्यांकन मात्र शेयर में तुरंत तेजी नहीं लाएगा, बल्कि इसके लिए कंपनियों की बिक्री और मुनाफे में ठोस सुधार भी आवश्यक होगा।

पेंट कंपनियों की बिक्री में दिसंबर तिमाही में आ सकती है तेजी

सितंबर तिमाही में भी प्रमुख पेंट कंपनियों ने अच्छी रेवेन्यू ग्रोथ दर्ज की थी

मुंबई

देश की पेंट कंपनियों के लिए दिसंबर तिमाही बेहतर रहने की उम्मीद है। त्योहारी सीजन, शादी-विवाह की मांग और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से कंपनियों के कारोबार को सहारा मिल सकता है। सितंबर तिमाही में भी प्रमुख पेंट कंपनियों ने अच्छी रेवेन्यू ग्रोथ दर्ज की थी। अब ब्रोकरेज फर्म्स को दूसरी छमाही में बिक्री और मुनाफे में सुधार की उम्मीद है। हालांकि, कच्चे माल की लागत और बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा कंपनियों के लिए चुनौती बनी हुई है।

सितंबर तिमाही में देश की पांच प्रमुख लिस्टेड पेंट कंपनियों का कुल रेवेन्यू सालाना आधार पर 17 फीसदी बढ़ा था। एशियन पेंट्स की बिक्री वाल्यूम में करीब 6.4 फीसदी और बर्जर पेंट्स में तीन फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

हालांकि, पिछले साल इसी अवधि में इन कंपनियों की वाल्यूम ग्रोथ 9 से 11 फीसदी के बीच रही थी। इस साल दिवाली नवंबर में होने के कारण त्योहारी मांग का बड़ा हिस्सा दिसंबर तिमाही में आने की संभावना है। एशियन पेंट्स ने सितंबर तिमाही में लगातार चौथी बार मजबूत रेवेन्यू ग्रोथ दर्ज की। वहीं, बर्जर पेंट्स का कंसोलिडेटेड रेवेन्यू 13.2 फीसदी बढ़ा। कंसाई नेरोलैक के रेवेन्यू में भी सालाना आधार पर 19 फीसदी की वृद्धि हुई। कंपनी को डेकोरेटिव और इंडस्ट्रियल दोनों कारोबार से फायदा मिला। बिक्री बढ़ने के बावजूद कंपनियों के सामने लागत का दबाव बना हुआ है।



सितंबर तिमाही में एशियन पेंट्स और बर्जर पेंट्स के ग्रास मार्जिन में 3.5 से 3.9 फीसदी अंक तक गिरावट आई। कच्चे तेल, पैकेजिंग सामग्री और टाइटेनियम डाइआक्साइड की कीमतों में बढ़ोतरी इसका प्रमुख कारण रही। हालांकि, खर्चों पर नियंत्रण और परिचालन दक्षता से आपरेटिंग प्राफिट मार्जिन में गिरावट सीमित रही। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी से कंपनियों को राहत मिल सकती है, लेकिन लागत घटने का पूरा फायदा मिलने में समय लगेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक, अक्टूबर में त्योहारों के कारण बिक्री अच्छी रही, जबकि नवंबर में मांग कुछ धीमी पड़ी। आगे शादी-विवाह का सीजन, ग्रामीण मांग और नए निर्माण प्रोजेक्ट्स बिक्री को गति दे सकते हैं। कमजोर मानसून से ग्रामीण आय और मांग पर पड़ने वाला असर चिंता का विषय है। उम्मीद है कि आने वाली तिमाहियों में कंपनियों के मार्जिन में तिमाही आधार पर सुधार होगा, हालांकि सालाना आधार पर दबाव बना रह सकता है।

एनसीडीईएक्स पर बिनौला खली और ग्वार काम्प्लेक्स में लौटी चमक, हल्दी और धनिया में मुनाफावसूली हावी

नई दिल्ली

नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव्स एक्सचेंज (एनसीडीईएक्स) पर सप्ताह के पहले कारोबारी दिन कृषि जिंसों के कारोबार में मिला-जुला रुख नजर आ रहा है। पिछले सप्ताह की गिरावट के बाद बिनौला खली और ग्वार काम्प्लेक्स में निचले स्तरों पर अच्छी खरीदारी लौट आई है, जबकि हल्दी और धनिया में मुनाफावसूली का दबाव बना हुआ है। हाजिर मंडियों में आवक की स्थिति और निर्यात मांग के संकेतों के आधार पर ट्रेडर्स और मिलर्स अपनी नई पोजीशन बना रहे हैं।

पशु आहार क्षेत्र की प्रमुख जिंस बिनौला खली यानी कपासिया खली (काटन सीड आयल केक) में सबसे अधिक तेजी दर्ज की गई है। एनसीडीईएक्स पर बिनौला खली का दिसंबर वायदा कान्ट्रैक्ट 2.11 प्रतिशत की शानदार बढ़त के साथ 4,110 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आया। इसी तरह इसका जनवरी वायदा कान्ट्रैक्ट 1.52 प्रतिशत उछल कर 4,142.00 रुपये और फरवरी वायदा 1.68 प्रतिशत की तेजी के साथ 4,169.00 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर पहुंच गया। डेयरी और पशु आहार निर्माताओं की लगातार बढ़ती हाजिर मांग तथा कपास की सीमित आवक के कारण बिनौला खली की कीमतों को मजबूत समर्थन मिल रहा है।

ग्वार काम्प्लेक्स में भी खरीदारों की सक्रियता लौटने से सकारात्मक माहौल बना हुआ है। ग्वार सीड का दिसंबर वायदा कान्ट्रैक्ट 0.85 प्रतिशत की मजबूती के साथ 8,225.00 रुपये प्रति क्विंटल और जनवरी वायदा कान्ट्रैक्ट



1.04 प्रतिशत उछल कर 8,352 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी प्रकार ग्वार गम के जनवरी वायदा कान्ट्रैक्ट में भी 0.95 प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई और यह 16,330 रुपये प्रति क्विंटल के भाव पर पहुंच गया। राजस्थान और गुजरात की प्रमुख मंडियों में किसानों की ओर से बिकवाली कम रहने और निचले स्तरों पर गम मिलों की खरीदारी निकलने से ग्वार की कीमतों में सुधार देखा जा रहा है।

मसाला वर्ग की बात करें तो जीरे में मामूली बढ़त, जबकि हल्दी और धनिया में गिरावट का रुख नजर आ रहा है। एनसीडीईएक्स पर जीरे का दिसंबर वायदा कान्ट्रैक्ट 0.25 प्रतिशत की तेजी के साथ 27,600 रुपये प्रति क्विंटल और जनवरी वायदा 0.07 प्रतिशत बढ़कर 27,905 रुपये प्रति क्विंटल पर कारोबार करता दिखा। उंझा और जोधपुर की हाजिर मंडियों में सामान्य मांग के चलते जीरे की कीमतें एक सीमित दायरे में स्थिर बनी हुई हैं।

दूसरी ओर, हल्दी और धनिया के वायदा कान्ट्रैक्टों में बिकवाली का दबाव हावी है। किसान पालिश हल्दी का दिसंबर वायदा 1.31 प्रतिशत फिसल कर 25,704 रुपये प्रति क्विंटल और अप्रैल वायदा 1.60 प्रतिशत टूट कर 26,050 रुपये प्रति क्विंटल के स्तर पर आ गया है।

एक्सचेंज की ओर से हल्दी कान्ट्रैक्टों पर लगाए गए अतिरिक्त मार्जिन के कारण भी ट्रेडर्स ऊपरी स्तरों पर मुनाफावसूली कर रहे हैं। धनिया के दिसंबर वायदा कान्ट्रैक्ट में भी 0.65 प्रतिशत की कमजोरी दर्ज की गई और यह 16,300 रुपये प्रति क्विंटल पर कारोबार कर रहा है, जबकि जनवरी वायदा 0.47 प्रतिशत गिर कर 15,598 रुपये और अप्रैल वायदा 1.28 प्रतिशत लुढ़क कर 14,200 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया। तिलहन वर्ग में अरंडी के वायदा कान्ट्रैक्टों में सुस्त कारोबार देखा जा रहा है और यह 8,240 रुपये प्रति क्विंटल के आसपास एक सीमित दायरे में घूम रहा है।